Dr Sunita Kumari,Guest Asst Prof,
Dept of Home Science
SNSRKS College, Saharsa

गृह प्रबन्ध
(Home Management)

Dt.06/02/2022

गृह प्रबन्ध (व्यवस्था) की अवधारणा (Concept of Home Management) :— गृह प्रबन्ध की आवश्यकता से अवगत होने से पहले प्रबन्ध या प्रबन्धन (Management) क्या होता है इसके बारे में जानना आवश्यक है।

सामान्य अर्थों में प्रबन्ध का आशय है "किसी भी इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सुनियोजित प्रकार से किया गया कार्य" अर्थात उपलब्ध साधनों का मितव्ययिता पूर्वक सदुपयोग करते हुए कार्यों को सर्वोत्तम ढंग से सम्पादित करना जिससे आकांक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके प्रबन्ध कहलाता है।

परन्तु प्रबन्ध एक व्यापक शब्द है। जिसका उपयोग एवं अर्थ व्यवसायिक औद्योगिक, एवं घरेलू संदर्भ में भिन्न-भिन्न हो सकता है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जो प्रायः सभी व्यक्तियों द्वारा अपने उपलब्ध संसाधनों के उपयोग के एक योजना बद्ध प्रारूप में संचालित की जाती है।

प्रबन्ध वास्तव में कला एवं विज्ञान का संगम है जिसके अन्तर्गत प्रबन्ध प्रक्रिया के विभिन्न घटकों जैसे - नियोजन, संगठन समन्वयन, एवं प्रेरक तत्वों जैसे - उत्प्रेरणा, नियंत्रण आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की उन्नति प्रगतियाँ उपलब्ध संसाधनों के उचित प्रबन्ध पर निर्भर करती है।

मानव जीवन में प्रत्येक स्थान पर प्रबन्ध का सर्वाधिक महत्व है। प्रबन्ध के अनुसार किया गया कार्य सफलता तथा शीघ्रता से पूर्ण हो जाता है।

इस प्रकार हम जहाँ एक ओर विभिन्न संस्थानों, औद्योगिक एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में प्रबन्ध अनिवार्य है, वहीं

पारिवारिक जीवन में गृह प्रबन्ध की अत्यन्त आवश्यकता होती है। पारिवारिक कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए व्यवस्था का पालन करना पड़ता है इसी को गृह प्रबन्ध कहा जाता है।

गृह प्रबन्ध के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि परिवार के पास उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग करते हुए गृह की व्यवस्था संभालना ही गृह प्रबन्ध है।

गृह प्रबन्ध की अवधारणा :- गृह प्रबन्ध एक सतत एवं परिवर्तनशील प्रक्रिया है जिसमें लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निर्णय लेकर कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है। गृह प्रबन्ध पारिवारिक जीवन का प्रशासनात्मक पक्ष है, इसमें परिवार के हितों को समाहित करते हुए प्रत्येक पारिवारिक सदस्य का नैतिक, पारिवारिक एवं व्यक्तित्व का विकास करना सम्मिलित है, जिसमें पारिवारिक सदस्यों को जीवन की विपरीत परिस्थितियों में समस्या का निराकरण कर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

गृह व्यवस्था या प्रबन्धन (व्यवस्था) शब्द का प्रयोग दैनिक जीवन में सामान्यतः किया जाता है। सामान्य शब्दों में गृह प्रबन्ध एक साधन मात्र है, अर्थात हमारे पास जिस परिस्थिति में जो भी साधन उपलब्ध है उनका सर्वोत्तम उपयोग किस तरह किया जाए जिससे हमारी इच्छाएँ और हमारे उद्देश्य अच्छी तरह से पूरी हो सकें। यहाँ साधनों का अर्थ उन वर्तमान साधनों से लगाया जाता है जो हमारे पास रहता है और इच्छाओं का अर्थ लक्ष्यों से रहता है। साधनों के अन्तर्गत परिवार के सभी सदस्यों के साधन सम्मिलित होते हैं। साधन के अन्तर्गत समय, शक्ति, धन, एवं भौतिक वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं और साथ ही साथ परिवार के सदस्यों का ज्ञान, उनकी रुचियाँ, कुशलता, योग्यताएँ एवं ~~समाज~~ सामुदायिक सुविधाएँ भी सम्मिलित कि जाती हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गृह-प्रबन्ध की प्रक्रिया परिवार में उपलब्ध शारीरिक,

बौद्धिक, सामाजिक, भौतिक, आर्थिक संसाधनों का सफल उपयोग करना सिखाती है।

गृह प्रबन्ध एक अदृश्य मानसिक प्रक्रिया है, जो घर के भीतर अबाध गति से चलती रहती है। घर में अनेक कार्य होते हैं जिनको करने के लिए गृह प्रबन्ध का सहारा लेना पड़ता है।

प्रबन्ध करना एक कला है, कला का अर्थ सौन्दर्य से है। प्रत्येक व्यक्ति में सौन्दर्य की अनुभूति एवं प्रदर्शन की प्रवृत्ति किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति प्रबन्ध करना सीखता है लेकिन अच्छा या बुरा प्रबन्ध व्यक्ति के कुशलता पर निर्भर करता है। प्रबन्ध करना एक आन्तरिक गुण है जो सभी व्यक्तियों में समान रूप में नहीं पाया जाता है।

गुड एण्डरसन के अनुसार गृह व्यवस्था (प्रबन्ध) समस्त देशों में आर्थिक समान व्यवस्था है जिसमें अधिकांश व्यक्ति कार्यरत हैं तथा अधिकांशतः धन का उपयोग किया जाता है और यह व्यक्तियों के स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। वर्तमान युग में गृहप्रबन्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है जिसका प्रमुख कारण, समय के मूल्य में वृद्धि, व सीमित साधन और प्रबन्धकर्ता के बढ़ते हुए विविध कार्य हैं।

अन्त में पारिवारिक जीवन में समयानुसार लक्ष्यों को प्राप्त कर सुख, शान्ति एवं सन्तुष्टि का वातावरण बनाने के लिए गृहिणी का एक कुशल प्रबन्धक भी होना अति आवश्यक है।